विकासात्मक विलम्ब की प्रारम्भिक पहचान में शिक्षक की भूमिका

किन्नरी पंड्या

केस 1

ढाई साल की रमा, तीन भाई-बहनों में से दूसरी है। उसके माता-पिता बेंगलूरु के बाहर एक*

फार्म में सब्ज़ियाँ उगाते हैं। पास के वैकल्पिक स्कूल में उसने और उसकी बड़ी बहन ने दाख़िला लिया। उसके माता-पिता को एहसास होने लगा था कि रमा को सुनने में कुछ परेशानी है। वे चाहते थे कि रमा भी अन्य सभी बच्चों की तरह विकास करे। उन्हें विश्वास था कि वह शायद उन बच्चों जैसी है जो मौखिक भाषा का विकास सामान्य समय से थोड़ी देर बाद करते हैं। रमा का परिवार एक ऐसी संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ वयस्कों और बच्चों के बीच बहुत कम या कोई बातचीत नहीं होती है और अगर बातचीत होती भी है तो उसकी प्रकृति कार्यात्मक ही अधिक रहती है।

जब उसने स्कूल जाना शुरू किया तो शिक्षकों ने महसूस किया कि रमा निकट या दूर से आने वाली ध्वनियों के लिए कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखाती। उसका चेहरा भावशून्य ही रहता है। अवलोकनों और प्रारम्भिक जाँच से शिक्षकों को पता लगा कि रमा को 'कुल श्रवण ह्रास' (total hearing loss) की समस्या थी। इसलिए इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं थी कि वह बहुत कम बोलती या मुश्किल से ही किसी बात का जवाब देती थी।

अभिभावक समुदाय में डॉक्टरों की मदद से शिक्षकों ने यह पता लगाया कि एक कर्णावत प्रत्यारोपण (Cochlear implant) से आंशिक श्रवण-शक्ति को बहाल करने में मदद मिल सकती है और वह अन्ततः बोलने में सक्षम होगी। उसके माता-पिता की आर्थिक पृष्ठभूमि ऐसी नहीं थी कि वे प्रत्यारोपण का ख़र्चा उठा सकें। शिक्षक समूहों के सक्रिय जुड़ाव, सोशल मीडिया नेटवर्क और क्राउड-सोर्सिंग के माध्यम से उन्होंने प्रत्यारोपण के लिए छह लाख रुपए जुटाए।

आज प्रत्यारोपण के एक साल बाद रमा अपना नाम पुकारे जाने पर जवाब देती है, कुछ शब्द दोहराती है और अपने आसपास के वातावरण को समझने लगी है। उसके शिक्षकों ने बताया कि नियमित स्पीच थेरेपी ने उसे स्पष्टता के साथ ध्वनियों को बोलने में सक्षम बनाया है लेकिन उनकी चुनौती यह है कि वे इन गहन प्रयासों को जारी रखें और घर पर भी उसे लगातार एक समृद्ध मौखिक भाषा का वातावरण प्रदान करें।

केस 2

लगभग चौबीस साल की आशा, वड़ोदरा शहर के बाहर एक गाँव में रहने वाले किसान परिवार में चार भाई-बहनों में सबसे बड़ी थी। मैंने उसे पहली बार 2004 में देखा था। तब वह नौ साल की थी। उसके परिवार ने बताया कि वह 'पागल' (मानसिक रूप से मन्द) है। वह एक पालने में लेटी हुई थी। उसकी लम्बाई लगभग डेढ़ फीट थी। दिन भर में उसे क़रीब आधी रोटी ही मिलती थी जिसके सहारे वह जीवित थी। उसकी जीभ बाहर को निकली हुई थी और उसके चारों तरफ़ मक्खियाँ भिनक रही थीं... वह आवाज़ें निकाल सकती थी, लोगों को पहचान सकती थी। अपने परिवेश और घटनाओं से अच्छी तरह वाक़िफ़ थी लेकिन कोई भी शारीरिक गतिविधि नहीं कर पाती थी।*

मैंने सामाजिक रक्षा विभाग के कार्य और बच्चों तथा ग़रीबों के लिए अन्य कल्याणकारी सेवाओं के बारे में अध्ययन किया था। इसलिए मैं आशा की दादी को इस बात के लिए राज़ी कर सकी कि वे आशा को लेकर सामाजिक रक्षा कार्यालय में जाएँ और दो सौ रुपए प्रति माह का मुआवज़ा प्राप्त करें। उल्लेखनीय विकलांगता का मुआवज़ा प्राप्त करने के लिए डॉक्टर का प्रमाणपत्र प्राप्त करना आवश्यक था। इस प्रमाणपत्र के लिए एक सामान्य अस्पताल में, पहले मनोचिकित्सकों और बाद में बाल रोग विशेषज्ञ से मिलने के बाद, यह एक विशुद्ध संयोग ही था कि आशा को पूरी तरह से नया जीवन मिला। पता चला कि आशा को क्रेटिनिज़्म था यानी 'जन्मजात आयोडीन की कमी का सिंड्रोम। यह सिंड्रोम थाइरॉइड हार्मोन की अनुपचारित जन्मजात कमी के कारण गम्भीर शारीरिक और मानसिक अविकास की स्थिति पैदा करता है, (जन्मजात हाइपोथाइरॉइडिज़म), जिसका कारण आमतौर पर मातृ हाइपोथाइरॉइडिज़म होता है।[i]

उसका केस एक ऐसा प्रकटीकरण था जो स्थानीय मेडिकल कॉलेज के लिए अध्ययन का कारण बन गया। संक्षेप में कहें तो लगभग दस मिलीग्राम थाइरॉइड टैबलेट के उपचार से उसके चयापचय, भूख और वृद्धि के पैटर्न में महत्त्वपूर्ण बदलाव आए। आशा लम्बी हो गई, उसने चलना शुरू कर दिया, उसकी भाषा विकसित हुई और धीरे-धीरे वह ख़ुद की देखभाल करने में काफी स्वतंत्र हो गई। तेरह साल की उम्र में वह अपने

चार साल के भाई के साथ आँगनवाड़ी केन्द्र (एडब्ल्यूसी) में जाने लगी। उसने अब शायद स्कूली शिक्षा पूरी कर ली है और एक वयस्क के रूप में स्वतंत्र हो गई है।

ग्यारह साल तक आशा को बुनियादी स्वास्थ्य सेवाओं, पोषण और प्रेरणा से केवल इसलिए वंचित रखा गया क्योंकि इस तरह के मामलों की 'पहचान' नहीं हो पाई थी। यह स्थिति तब थी जब आसपास के क्षेत्र में एक स्कूल, आँगनवाड़ी केन्द्र और एक ग्राम स्वास्थ्य केन्द्र मौजूद थे। बेशक, मेरे लिए महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि वह बच गई! निश्चित रूप से आशा का यह केस ऐसे कई मामलों में से एक है।

हालाँकि आशा का मामला एक दशक से अधिक पुराना है लेकिन यह आज भी मुझे बच्चों के वातावरण से जुड़े उन पहलुओं के बारे में आश्चर्यचकित करता है जो एक स्वस्थ बच्चे के विकास को प्रभावित करते हैं। आशा के निकटतम वातावरण के महत्त्वपूर्ण लोगों— दादी, माता-पिता और समुदाय —ने उसे जीवित रहने में सक्षम किया। उसकी देखभाल की और इलाज की सम्भावनाओं के बारे में जानने के बाद उसे स्वास्थ्य पेशेवरों के पास ले गए। उनका मार्गदर्शन लिया और यह सुनिश्चित किया कि वह एडब्ल्यूसी और स्कूल में जाए। इसके अलावा उन्होंने आशा को सामाजिक रूप से भी प्रशिक्षित किया ताकि वह अपने जीवन को स्वतंत्र रूप से प्रबन्धित कर सके।

उपर्युक्त दोनों मामले यह बताते हैं कि बच्चे का निकटतम वातावरण उसका स्वस्थ बचपन सुनिश्चित करने में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। माता-पिता और शिक्षकों पर बच्चों की इष्टतम वृद्धि और विकास में मदद करने की सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी है।

विभिन्न आयु समूहों तथा कक्षाओं में, विशेष रूप से बचपन के शुरुआती वर्षों में, बच्चों के समग्र स्वास्थ्य और कल्याण को सुनिश्चित करने में शिक्षकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। शुरुआती वर्षों में बच्चों की शिक्षा उनके समग्र विकास से सम्बन्धित होती है। यूँ तो प्रत्येक बच्चा अपनी ही विशिष्ट गति से विकसित होता है और उनमें वैयक्तिक रूप से अन्तर होता है, फिर भी विकास के प्रक्षेत्र में विकासात्मक विलम्ब या असामान्य व्यवहार की स्थिति में समय पर हस्तक्षेप के लिए अवलोकन करना, रिपोर्ट करना और विशेषज्ञ की सलाह का पालन करना महत्त्वपूर्ण है।

संवेदनशील, चिन्तनशील और समावेशी शिक्षक इस दिशा में निम्नलिखित क़दम उठा सकते हैं

अपने विद्यार्थियों को जानें

घर के बाद स्कूल ही वह स्थान है जहाँ बच्चे अपना अधिकतम समय व्यतीत करते हैं। शिक्षक के लिए प्रत्येक बच्चे की पृष्ठभूमि और चिकित्सा सम्बन्धी इतिहास को जानना महत्त्वपूर्ण होता है। इससे वे यह समझ सकेंगे कि बच्चे को कोई गम्भीर बीमारी/बीमारियाँ तो नहीं हैं, जन्म के बाद से उसकी क्या स्थितियाँ रही हैं और स्कूल के बाहर बच्चे के जीवन में अकसर किस तरह की घटनाएँ होती हैं। छोटे बच्चों के शिक्षक के रूप में इन बातों की जानकारी होना भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि बच्चे की पारिवारिक पृष्ठभूमि कैसी है, माता-पिता का व्यवसाय क्या है, घर पर वे बच्चों के साथ कितना समय बिताते हैं और उसकी प्रकृति कैसी है, स्कूल के बाद बच्चे की क्या दिनचर्या रहती है आदि। हालाँकि प्रत्येक कक्षा में तीस-चालीस बच्चों के लिए इन सब बातों का पता लगाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य हो सकता है लेकिन बच्चे और बच्चे के परिवार के बारे में यह जानकारी शिक्षक को बच्चे के दिन-प्रतिदिन के व्यवहार और प्रगति को परिप्रेक्ष्य में रखने में मदद करेगी। चिकित्सा सम्बन्धी इतिहास के बारे में पता होने से शिक्षक को उन असामान्य संकेतों को पहचानने में मदद मिलेगी जिन पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

अवलोकन करें

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का एक महत्त्वपूर्ण अभ्यास यह है कि शिक्षक कक्षा में आयोजित विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से प्रत्येक बच्चे का अवलोकन करें। अवलोकन के दौरान, सिखाई जा रही विशिष्ट 'विषयवस्तु' के लिए अनुक्रिया करने की क्षमता और शैक्षिक क्षमता के अलावा, बच्चे के समग्र विकास के महत्त्वपूर्ण संकेतक इस प्रकार हैं : बच्चे की मनोदशा; विभिन्न गतिविधियों पर ध्यान केन्द्रित करने की क्षमता, निर्देशों का पालन करना, लोगों से घुलना-मिलना और आँखों से सम्पर्क करना, अपने स्वभाव का प्रबन्धन करना, अनैच्छिक क्रियाएँ, कुछ पुनरावृत्तियों के बाद समझना, स्थानिक पहलुओं को समझना, भाषा और तर्क करना आदि।

विकास प्रतिरूप (पैटर्न) में अन्तर्दृष्टि प्राप्त करें

बच्चों के साथ काम करने के अपने विशाल अनुभव और शिक्षा सिद्धान्तों का ज्ञान रखने वाले शिक्षक को विभिन्न आयु वर्ग के बच्चों के विकास के पैटर्न की उचित समझ होती है— कम से कम उन कक्षाओं के बारे में जिसमें उन्होंने कुछ वर्षों तक पढ़ाया है। विकासात्मक प्रगति और विभिन्न शारीरिक, अवधारणात्मक तथा सामाजिक जुड़ाव सम्बन्धी कार्यों को करने की बच्चों की क्षमता की इस समझ से शिक्षक, किसी भी प्रकार के विचलन— सकारात्मक और उन्नत विकास दोनों —या किसी बच्चे के विकास में ख़ास प्रकार के किसी विलम्ब को, समझने में सक्षम होंगे। बच्चे के व्यक्तिगत विकास की यह

सूक्ष्म समझ शिक्षक के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इससे वे बच्चे में किसी भी एक जैसे असामान्य पैटर्न पर ध्यान देने में सक्षम हो पाते हैं।

दस्तावेज़ीकरण

अवलोकन का अगला महत्त्वपूर्ण चरण स्कूल में बच्चों के काम का दस्तावेज़ीकरण है। उदाहरण के लिए, उपाख्यानात्मक (anecdotal) रिकॉर्ड को उन विशिष्ट पहलुओं के दस्तावेज़ीकरण का एक उपयोगी तरीक़ा माना जाता है जिन्हें शिक्षक नियमित रूप से बच्चे में देखते हैं। शिक्षक के दैनिक अवलोकन या विशिष्ट घटनाओं के नियमित नोट्स बच्चे की समस्याओं को इंगित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, किसी बच्चे का लगातार आँखों से सम्पर्क न करना या बार-बार अनैच्छिक क्रियाएँ करना या फिर उसका लेखन बच्चे में डिस्लेक्सिया के पैटर्न को दर्शा सकता है। दस्तावेज़ीकरण के अन्य रूप जैसे विकासात्मक जाँच सूची या पोर्टफोलियो— जो प्रत्येक बच्चे के कार्यों का रिकॉर्ड रखता है, बच्चे की वृद्धि और विकास के बारे में बताने के लिए उपयोगी सबूत हैं।

साझा करना और साझेदार बनना

विकास स्पेक्ट्रम में बच्चे की क्षमताओं को पहचानने के लिए एक शिक्षक का व्यक्तिगत रूप से किया गया अवलोकन एक महत्त्वपूर्ण प्रारम्भिक बिन्दु है। इस बात की सम्भावना हमेशा बनी रहती है कि जो कुछ शिक्षक देखते हैं वे उस सन्दर्भ विशेष के लिए ख़ास हों न कि बच्चे द्वारा प्रदर्शित एक सिलसिलेवार पैटर्न। बच्चों के बारे में किए गए अवलोकनों— ध्यान दिए गए विशिष्ट पहलू; चिन्ताएँ या सकारात्मकता —को शिक्षकों के बड़े समूह के साथ साझा करने से अन्य सन्दर्भों में देखे गए व्यवहार को पुष्ट करने में मदद मिलेगी। किसी घटना के प्रति बच्चे की प्रतिक्रिया या विकास के क्षेत्र में पैटर्न की सामूहिक समझ, शिक्षक समूह को कई स्तरों पर सक्षम बनाएगी, जैसे :

- बच्चे की स्थिति का सटीक निर्णय लेने में (चाहे वह एक अस्थायी घटना हो या कोई ऐसी चीज़ जिस पर सूक्ष्म रूप से ध्यान देने की आवश्यकता है)।
- अपने स्वयं के स्तर पर बच्चे की मदद करने के लिए सहयोग करने में। उदाहरण के लिए शैक्षिक मदद, बच्चे को सुनना, वैयक्तिक कार्यक्रमों और अलग-अलग शैक्षणिक दृष्टिकोण की योजना बनाना।
- माता-पिता के साथ घर पर बच्चों के किसी निरन्तर पैटर्न पर चर्चा करने में।
- यदि और जहाँ आवश्यक हो, वहाँ अगले क़दम उठाने के बारे में निर्णय लेने में।

विकलांगता के सन्दर्भ में प्रत्येक कार्य के लिए सामूहिक प्रयास होना चाहिए। अपने व्यक्तिगत स्तर पर माता-पिता और शिक्षक एक निश्चित बिन्दु के बाद शायद अप्रभावी हो जाएँ। किसी बच्चे के बारे चिन्ताजनक पहलू की पहचान होने पर उसकी मदद करने के लिए माता-पिता और शिक्षक का साझेदारी के साथ काम करना बहुत ज़रूरी हो जाता है। इसके अलावा यह साझेदारी उन पेशेवरों के साथ भी होनी चाहिए जो बच्चे के उपचार और थेरेपी में सहायता देते हैं, जैसे कि बाल रोग विशेषज्ञ, फ़िज़ियोथेरेपिस्ट, स्पीच और प्रोफ़ेशनल थेरेपिस्ट, बड़े बच्चों के लिए वृत्तिक शिक्षक (vocational educators) इत्यादि। रमा का उदाहरण शिक्षक समूह के सामूहिक प्रयासों का एक अच्छा उदाहरण है, जिसमें सुनने में उसकी मदद करने के लिए सबने मिलकर प्रयास किया— समस्या की पहचान करने से लगाकर सभी सम्बन्धित लोगों के साथ भागीदारी करने तक।

नेटवर्क और उल्लेखन

विकलांगता या तत्सम्बन्धी सरोकारों को सम्बोधित करने के लिए उल्लेख या ज़िक्र करना (रेफरल) महत्त्वपूर्ण है। बच्चों के सबसे क़रीबी पर्यवेक्षकों में से एक यानी शिक्षक माता-पिता पर भी महत्त्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं। शिक्षकों और स्कूलों के पास ऐसे पेशेवरों का एक नेटवर्क होना चाहिए जिनके पास बच्चे को मदद के लिए ले जाया जा सके। यह नेटवर्क शिक्षकों और परिवारों को उन सभी विशिष्ट सुविधाओं और प्रावधानों का लाभ उठाने में मदद करता है जो विभिन्न प्रकार की विकलांगता वाले बच्चों के लिए उपलब्ध हैं। अगर स्थानीय स्कूल के शिक्षक, आँगनवाड़ी के कार्यकर्ता या स्वास्थ्य सेवा के कार्यकर्ता आशा की समस्या को पहचान लेते तो वह अपने जीवन के क़ीमती ग्यारह साल इस तरह से न खो बैठती।

रमा के मामले में उपर्युक्त सभी पहलुओं का योगदान साफ़ नज़र आता है, जिसकी वजह से वह बोलने और भाषा की क्षमता हासिल कर पाई, अपने आसपास की दुनिया को समझकर उसके साथ जुड़ पाई और उसके स्वतंत्र होने की सम्भावनाएँ खुल गईं। इससे आगे चलकर वह समाज के लिए एक योगदानकर्ता बन पाई।

चालीस बच्चों की कक्षा में शायद किसी एक (या शायद एक भी नहीं) विद्यार्थी में विलम्बता का कोई रूप नज़र आ सकता है, लेकिन यह बात अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है कि उस एक बच्चे पर सही समय पर अपेक्षित ध्यान दिया जाए। उसके परिवार को उसकी मदद करने के लिए आवश्यक मार्गदर्शन मिले।

शिक्षकों के रूप में हम प्रत्येक बच्चे के भविष्य के निर्माण, उसके विकास और उसकी प्रगति के लिए ज़िम्मेदार हैं। हमारे सन्दर्भ में विद्यार्थी-शिक्षक अनुपात बहुत उच्च होने के कारण

कक्षाओं में वैयक्तिक रूप से ध्यान देना और देखभाल करना चुनौतीपूर्ण लग सकता है, किन्तु यह असम्भव नहीं है। एक तेज़नज़र, चिन्तनशील और सक्रिय शिक्षक, अपने स्कूल के समर्थन के साथ, समय पर हस्तक्षेप प्रदान करके बच्चे के जीवन में चमत्कार कर सकते हैं। सभी रमाओं और आशाओं की मदद की जा सकती है— बशर्ते उनके वातावरण में सभी की सामूहिक इच्छा हो और हम सबको मिलकर इस प्रकार के वातावरण का निर्माण करना चाहिए।

i https://www.merriam-webster.com/dictionary/cretinism 4 नवम्बर 2019 को पुनः प्राप्त किया गया।

*पहचान के संरक्षण के लिए नाम बदल दिए गए हैं।



किन्नरी पंड्या अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय में बाल विकास और प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा कोर्स पढ़ाती हैं। वे सार्वजनिक तंत्र में प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा पर अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन द्वारा की जा रही कई पहलक़दमियों में योगदान देती हैं। उनसे kinnari@apu.edu.in पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : नलिनी रावल